IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोसी क्षेत्र में कम होती लिंगानुपात : एक भौगोलिक अध्ययन

1. डॉ. शम्भु कुमार, 2. नूतन कुमारी, 3. अमृता प्रीतम, 4. रश्मि अनंत, 5. पलक राज

विश्वविद्यालय भूगोल विभाग

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

सारांशः–

किसी जनसंख्या में स्त्रियों तथा पुरुषों के अनुपात को 'लिंगानुपात' कहते हैं। इसे भारत में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या द्वारा व्यक्त किया जाता है। जनगणना–2011 के अनुसार बिहार में लिंगानुपात '918' है अर्थात् 1000 पुरुषों पर मात्र 918 स्त्रियाँ हैं। जो राष्ट्रीय औसत 943 से 25 कम है। उसी तरह कोसी क्षेत्र में लिंगानुपात मात्र 913 है जो कि बिहार के औसत लिंगानुपात से 5 कम है। लिंगानुपात के वितरण में क्षेत्रीय असमानताएँ देखने को मिलती है।

लिंग अनुपात किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक सूचक है तथा प्रादेशिक विश्लेषण के लिए अत्यन्त लाभदायक यन्त्र है। लिंग अनुपात का प्रभाव अन्य जनसांख्यिकीय तत्वों जैसे जनसंख्या वृद्धि, विवाह–दर, व्यावसायिक संरचना पर भी माना गया है। अतः लिंग अनुपात का ज्ञान रोजगार तथा उपयोग प्रारूप तथा किसी समुदाय की सामाजिक आवश्यकताओं को समझने के लिए आवश्यक है।

शब्द कुंजीः– जनगणना–2011, लिंगानुपात, शिशु लिंग अनुपात, भ्रूण हत्या, लिंग संघटन

परिचयः–

कोसी क्षेत्र बिहार के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र को कोसी क्षेत्र कहते हैं जिसके अन्तर्गत सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, पूर्णिया भारत की जनगणना 2011 के अनुसार दशकीय वृद्धि दर जहाँ 17.7 प्रतिशत है तथा बिहार की जनसंख्या वृद्धि की दर 25.4 है वही कोसी प्रदेश की दशकीय जनसंख्या वृ0 दर 28.7 प्रतिशत है।

अध्ययन क्षेत्रः–

कोसी क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न जिला जैसे– सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, पूर्णिया, अररिया, किशनगंज और कटिहार आते हैं बिहार के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र को कोसी क्षेत्र कहते हैं जिसमें मुख्य रूप से कोसी महानन्दा और उनके सहायक नदियाँ बहती है। इस क्षेत्र में बहनेवाली कोसी नदी प्रलयंकारी बाढ़ लाने के लिए कुख्यात है जो अपना रौद्र रूप समय–समय पर दिखाती रहती है, इसने अपना रौद्र रूप हाल ही में 2003 व 2008 में दिखा चुकी है। इस क्षेत्र के लोग का मुख्य व्यवसाय कृषि है। बाढ़ के कारण इस क्षेत्र में गरीबी का दुसचक्र चलता रहता है। इस क्षेत्र में सामान्यतः आन्तरिक समानता देखने को मिलती है तथा इस क्षेत्र का भौगोलिक सीमा इसे एक अलग पहचान देता है।

इस क्षेत्र के पश्चिम की सीमा कोसी नदी के द्वारा तथा दक्षिण की सीमा कोसी व गंगा नदी के द्वारा बनती है। इस क्षेत्र के पूरब में बिहार से सटे पश्चिम बंगाल की सीमा तथा उत्तर में भारत व नेपाल की सीमा लगती है।

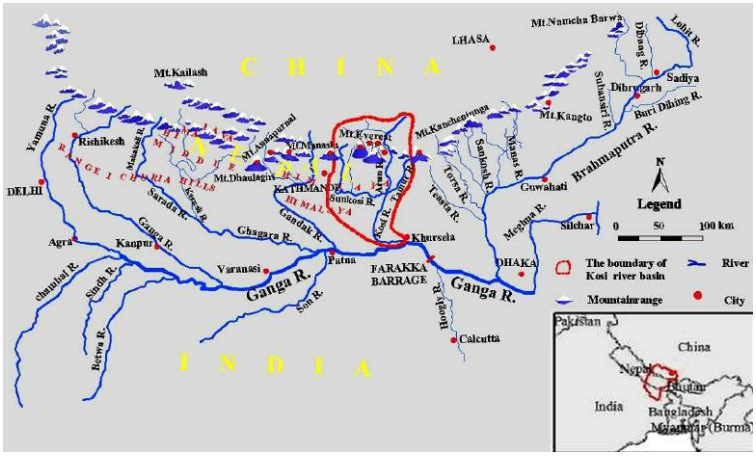

कोसी रिजन लोकल मैप–1

उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध–प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंः–

- ❖ कोसी प्रदेश में स्त्री–पुरूष अनुपात तथा शिशु लिंगानुपात के असमान वितरण का वर्णन व व्याख्या करना।
- ❖ अध्ययन क्षेत्र में कम होती लिंगानुपात की परिवर्तनशील प्रवृतियों के कारणों का पता लगाना।
- ❖ कोसी क्षेत्र में लिंगानुपात जलवायु संबंधी समस्याओं का पता लगाना।
- ❖ कोसी क्षेत्र के लिंगानुपात का विश्लेषण आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व व्यक्तिगत अभिवृतियों के आधार पर करना।

शोध–प्रविधिः–

प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषणात्मक विधि तंत्र का प्रयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र 'कोसी प्रदेश' की 1901 से 2011 तक के मध्य हुई जनगणना से प्राप्त आंकड़ों को एकत्रित कर दशकवार जनसंख्या लिंगानुपात में हुई परिवर्तनशीलता का विश्लेषण किया गया है। तत्पश्चात ग्रामीण व नगरीय लिंगानुपात में असमानता तथा क्षेत्रीय स्तर पर भी जनसंख्या लिंगानुपात में पाई गई असमानता का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र मुख्य रूप से द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है, परन्तु उचित रूप से अनुभवात्मक व अवलोकनात्मक विधितंत्रों का भी प्रयोग किया गया है। अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने हेतु उपर्युक्त तालिका, मानचित्र तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या द्वारा व्यक्त किया गया है। जैसे–

$$\text{लिंगानुपात } त्र = \frac{\text{स्त्रियों की जनसंख्या}}{\text{पुरुषों की जनसंख्या}} \times 1000$$

शिशु लिंग अनुपातः–

यह जनसंख्या में 0–6 आए समूह में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में उसी आयु समूह में स्त्रियों की संख्या है।

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर निकालने का सूत्र

$$\text{दशकीय वृद्धि दर} \quad \text{त्र} \quad \frac{\text{वर्तमान जनसंख्या–पूर्व जनसंख्या}}{\text{पूर्व जनसंख्या}} \times 1000$$

विवेचनाः–

जनगणना 2011 के अनुसार बिहार का औसत लिंगानुपात 918 है जो कि भारत के औसत लिंगानुपात 943 से 25 कम है। कोसी क्षेत्र का लिंगानुपात 913 है जो बिहार के औसत लिंगानुपात से कम है। इसमें भी क्षेत्रीय भिन्नता है जो कि 950 (किशनगंज) से 880 (उतरी भागलपुर) तक है। कोसी क्षेत्र के अन्तर्गत बिहार के नौ (9) जिले आते हैं जो इस प्रकार हैं– सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार, खगड़िया, उत्तरी भागलपुर कोसी प्रदेश में जनसंख्या की वृद्धि दर काफी तीव्र है। जहाँ भारत की जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर जहाँ 17.7 प्रतिशत है तथा बिहार की जनसंख्या वृद्धि की दर 25.4 है वही कोसी प्रदेश की दशकीय जनसंया वृद्धि दर 22.7 प्रतिशत है। जिसके कारणय इस प्रदेश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो चुकी है जो एक चिंता का विषय है।

टेबल–1

ॅसण्छवण	क्पेजतपबज	ज्वजंस च्वचनसंजपवद	क्मबंकंस ळतवूजी तंजम	ॅमग तंजपव	क्मदेपजल	बीपसक इपतजी तंजम ;0.6द्ध	स्पजमतंबल ;पद :द्ध
1ण	ॅनचंनस	2229076	88ण66	929	919	944	57ण67
2ण	ॅीतें	1900661	26ण02	906	1127	933	53ण20
3ण	डंकीमचनतं	2009762	31ण12	911	1120	930	52ण25
4ण	।तंतपं	2811569	30ण25	921	993	957	53ण53
5ण	ज्ञपींदहंदर	1690400	30ण40	950	897	971	55ण46
6ण	च्नतदपं	3264619	28ण33	921	1011	754	51ण08
7ण	ज्ञंजपींत	3071029	28ण35	919	1005	961	52ण24
8ण	ज्ञीहंतपं	1666886	3019	886	1122	926	57ण92
9ण	छण्ठींहंसचनत	3037766	25ण36	880	1182	938	63ण14
	ज्ञवेीप त्महपवद		**28ण74**	**913**	**1041**	**946**	**55ण16**

ॅवनतबमरू ब्मदेने वि प्दकपं 2011ए थ्पदंस कंजं ज्वजंसेए ठपींतॅमतपमेए 2011ण

जनसंख्या वृद्धि की दर भी अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग है। जहाँ मधेपुरा में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 31.12 प्रतिशत है। वही उत्तर भागलपुर में 25.36 है। इस प्रदेश में साक्षरता का प्रतिशत भी सम्पूर्ण बिहार के औसत (61.8) से काफी कम (55.16) है। साक्षरता के वितरण में भी क्षेत्रीय असमानता है जहाँ पूर्णिया में मात्र 51.08 प्रतिशत लोग साक्षर हैं वही भागलपुर में 63.14 प्रतिशत लोग साक्षर है।

ज्तमदके वि मग तंजपव

टेबल–2 एवं चित्र–2 कोसी क्षेत्र में हुई लिंगानुपात में कमी को दर्शाती है।

ज्ंइसम.2

ैमग तंजपव पद ज्ञवींप त्महपवद

ैसण्छवण	क्पेजतपबज	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
1ण	ैनचंनस	1014	1006	983	966	964	965	950	930	437	904	920	929
2ण	ैातें	1014	1006	923	966	964	965	963	926	934	884	910	906
3ण	डंकीमचनतं	1014	1006	983	966	964	916	928	902	919	885	915	911
4ण	।तंतपं	962	963	941	906	949	920	933	920	928	907	913	921
5ण	ज्ञपींदहंदर	962	963	941	936	949	863	873	907	922	933	936	950
6ण	च्नतदपं	962	963	941	936	949	925	928	914	924	903	915	921
7ण	ज्ञंजपींत	962	963	941	936	944	930	931	925	928	909	919	919
8ण	ज्ञींहंतपं	1045	1046	1022	998	998	939	943	894	902	868	885	886
9ण	छण्ठींहंसचनत	1057	1040	1028	987	968	944	929	887	898	864	876	880
	ज्ञवींप त्महपवद	999	995	974	959	962	930	931	912	921	895	910	913

ैवनतबम रू ब्मदेने वि प्दिकपंए 2011ए थ्पदंस कंजं ज्वजंसेए ठपींतैमतपमेए 2011ण

1901 में किसी प्रदेश में औसत लिंगानुपात999 था जो कि उ. भागलपुर में 1057 अररिया, खगड़िया, कटिहार, पूर्णिया में 962 तक था। जनगणना 1921 में कोसी प्रदेश के सभी जिलों की स्त्री–पुरूष अनुपात में कमी दर्ज की गई। 1991 की जनगणना में एक बार फिर लिंगानुपात में कमी देाी गई। इस साल औसतन लिगानुपात 895 दर्ज की गई जबकि उनसे पिछले जनगणना (1981) में लिंगानुपात 921 थी। सहरसा 884 मधेपुरा 885, खगड़िया 868 व उत्तर भागलपुर 864 में लिंगानुपात 900 से नीचे चली गई। उसी समय 910 से उपर लिंगानुपात मात्र एक जिला किशनगंज 933 में दर्ज की गई। जनगणना 2001 में सभी जिलों में लिंगानुपात में सुधार हुआ तथा यह औसतन 910 दर्ज की गई। फिर भी यह भारत के औसत लिंगानुपात 933 से काफी निम्न था। जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार कोसी क्षेत्र में लिंगानुपात में पिछली जनगणना की अपेक्षा सुधार हुआ है तथा लिंगानुपात 910 से बढ़कर 913 हो गई है। परन्तु ध्यान देनेवाली बात यह है कि इस दौरान कुछ जिलों का प्रदर्शान खराब रहा जहाँ लिंगानुपात में और कमी देखी गई वे जिला है– सहरसा व मधेपुरा। इस जनगणना में किशनगंज की स्थिति अच्छी रही जहाँ लिंगानुपात 950 दर्ज की गई। जो भारत के औसत लिंगानुपात 943 से ज्यादा है, लेकिन बाकी सभी जिलों में लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से काफी कम रहा है।

लिंगानुपात का स्थानिक वितरण

कोसी प्रदेश के स्तर से दक्षिण तथा उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम खण्ड की तरफ लिंगानुपात में अत्यधिक भिन्नता है।

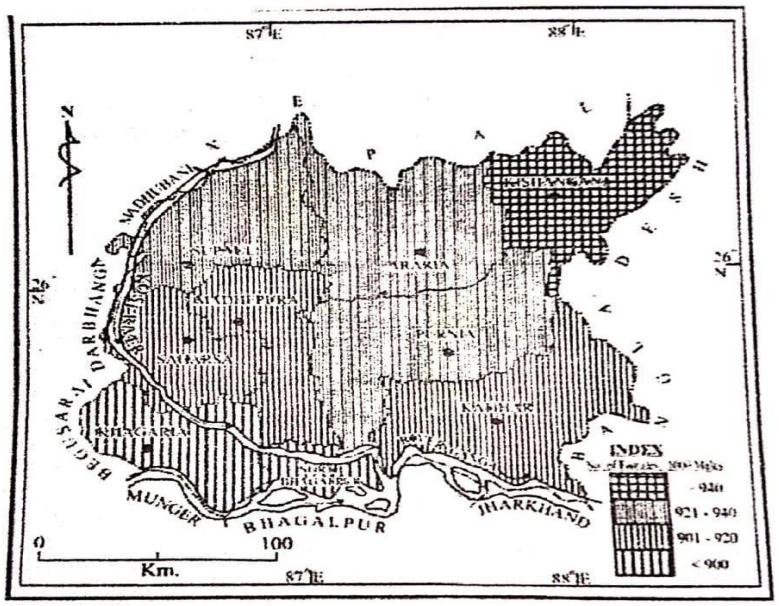

थ्पहण्2रू क्पेजतपइनजपवद वि॑मग त्ंजपव पद ज्ञवेप त्महपवद

चित्र–2 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि एक मात्र किशनगंज जिला में लिंगानुपात 940 से अधिक है। पूर्णिया, अररिया व सुपौल में मध्यम लिंगानुपात मिलता है तो 920 से 940 के बीच है, (920–940), जबकि कटिहार, मधेपुर और सहरसा में निम्न लिंगानुपात मिलता है जो 900 से 920 के बीच है। लिंगानुपात का चौथा इकाई खगड़िया (886) 930 भागलपुर (880) है जहाँ लिंगानुपात 900 से भी कम है तथा यह कोसी प्रदेश में अति निम्न लिंगानुपात का क्षेत्र है।

कोसी प्रदेश में लिंगानुपात की कमी व भिन्नता प्रभावित कारकों

कोसी प्रदेश के लिंगानुपात के वितरण को बहुत से कारकों के आधार पर व्याख्या किया जा सकता है, सबसे पहले लिंगानुपात की प्रवृति इस क्षेत्र में शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा संतुलित मिलता है। पूर्णिया, कटिहर व सहरसा के शहरी क्षेत्रों में लिंगानुपात किशनगंज, अररिया व सुपौली जैसे ग्रामीण जनसंख्या बहुत क्षेत्रों की तुलना में कम मिलता है। लिंगानुपात को प्रभावित करने वाला दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक है जनसंख्या का धार्मिक संघटन। सामान्यतः मुस्लिम जनसंख्या में लिंगानुपात हिन्दू जनसंख्या को अपेक्षा अधिक मिलताहै। उसी तरह जिस क्षेत्र से या जिला से उत्प्रवास अधिक है वहीं लिंगुपात अधिक मिलता है क्योंकि रोजगार की तलाश में ज्यादातर पुरूष प्रवास कर जाते है। जब जनगणना होती है तो महिलाओं की गिनती हो जाती है और अनुपात महिलाओं के पक्ष में चली जाती है। किशनगंज, पूर्णिया व अररिया से अधिक संख्या में पुरूष पं. बंगाल व बांग्लादेश को आर्थिक कारण से प्रवास कर गए है। जिसके कारण इस क्षेत्र में लिंगानुपात अधिक मिलती है। कोसी प्रदेश के दक्षिणी खण्ड जो कि पश्चिम में खगड़िया व भागलपुर नौगछिया सब डिविजन तक तथा पूरब में कटिहार जिला तक का एक बड़ा क्षेत्र विकास में आगे है। यहाँ अच्छी सड़के, स्वास्थ्य व शिक्षा की भी अच्छी सुविधाएँ मौजूदा है फिर भी यहाँ लिंगानुपात

कम मिलता है इसका कारण है– भ्रूण हत्यास, लचर व्यवस्था, कानून का सही से पालन नहीं होना भ्रष्टाचार के कारण लिंग परीक्षण के उपरान्त बालिका होने पर भ्रूण हत्या कर देना।

बालिका भ्रूण हत्या पढ़े–लिखे परिवारों में ज्यादा देखने को मिलता है हाल ही में छुट नए शोध लिंगानुपात व महिला साक्षरता के बीच नकारात्क सह–सम्बन्ध को दर्शाता है।

शिशु लिंगानुपात

यह जनसंख्या में 0–6 आयु समूह के प्रति 1000 पुरूषों की तुलना में उसी आयु समूह में स्त्रियों की संख्या है। भारत में शिशु लिंगानुपात लगातार कम होता जा रहा है जो तक खतरे की घंटी है। 2001 की जनगणना में भारत का एससीआर जहां 927 था वही जनगणना 2011 में यह घटकर 919 पर पहुंच गई। हमारे अध्ययन क्षेत्र में औसतन शिशु लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत 919 से अधिक 946 है। पिछले जनगणना से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि जहां अररिया, पूर्णिया, कटिहार, खगड़िया व उतरी भागलपुर में शिशु लिंगानुपात में कमी दर्ज की गई वही सुपौल, सहरसा, मधेपुरा व किशनगंज जैसे जिलों में शिुश लिंगानुपात बढ़ा है।

$$\text{शिशु लिंगानुपात (0–6 वर्ष)–} \quad \frac{\text{बालिकाओं की संख्या (0–6)}}{\text{बालकों की संख्या (0–6)}} \times 1000$$

तालिका संख्या–3

बेपसक॓मग तंजपव पद झवेप त्महपवद

॓सण्छवण	क्पेजतपबज	2001	2011
1ण	॓नचंनस	921	944
2ण	**॓ींतें**	**900**	**933**
3ण	**डंकीमचनतं**	**918**	**930**
4ण	**।तंतपं**	**967**	**957**
5ण	**ज्ञपींदहंदर**	**941**	**971**
6ण	**च्नतदपं**	**968**	**954**
7ण	**ज्ञंजपींत**	**966**	**961**
8ण	**ज्ञींहंतपं**	**942**	**926**
9ण	**छण ठींहंसचनत**	**966**	**938**
ज्ञवेप त्महपवद		**943**	**946**

॓वनतबमरू ब्मदेने वि्पदकपं 2011ए थ्पदंस क्ंजं ज्वजंसेए ठपींत॓मतपमेए 2011

ज्ञवेप त्महपवद टंतपंजपवद व ि बिपसक ैमग तंजपव 2011 ंदक 2011

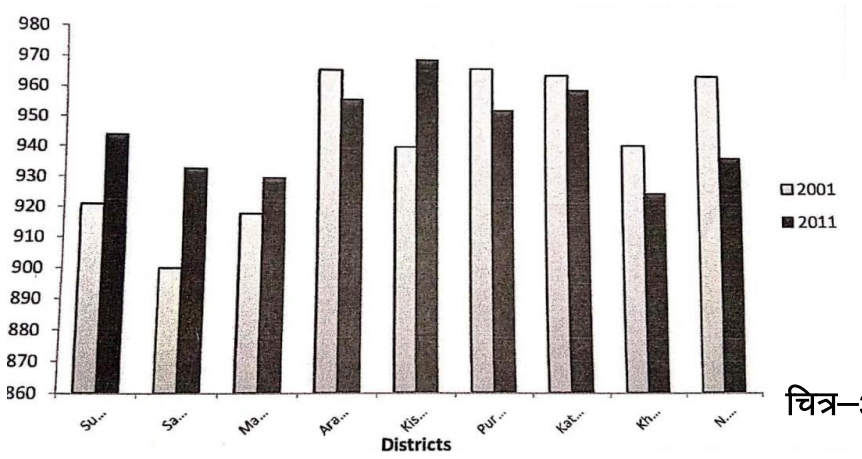

चित्र–3

चित्र–3 कोसी क्षेत्र के अलग–अलग जिलों में शिशु लिंगानुपात को दर्शाया गया है। खगड़िया और उत्तर भागलपुर में 2001 की तुलना में शिशु लिंगानुपात में तीव्र गिरावट दर्ज की गई है।

निष्कर्षः–

कोसी प्रदेश के सामान्य लिंगानुपात व शिशु लिंगानुपात के वर्णन से हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस प्रदेश में किशनगंज जिला को छोड़कर बाकि सभी जिले में लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत लिंगानुपात से कम है। इस प्रदेश के दक्षिण गंगा नदी से सटा हुआ क्षेत्र में लिंगानुपात अति निम्न है। खगड़िया लिला व भागलपुर का नवगछिया उपविभाग को इसमें रखा गया है। जनगणना 2001 के तुलना में 2011 में दक्षिणी खण्ड को छोड़कर सामान्य लिंगानुपात में बढोतरी हुई हैं। ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता/नगरीकरण का निम्न स्तर मुस्लिम जनसंख्या की बहुलता तथा निकट ही पश्चिम बंगाल व बांग्लादेश में जनसंख्या प्रवास के कारण कोसी प्रदेश के पूर्वी खण्ड में लिंगानुपात उच्च मिलता है।

संदर्भ–सूचीः–

1. जनगणना विभाग भारत सरकार, पटना 1961–2011
2. अताउल्लाह मोहम्मद (2008), बिहार का आधुनिक भूगोल, बिलियन्ट प्रकाशन, पटना।
3. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण (2011–12)
4. गौतम अलका : भारत का वृहत भूगोल, मेरठ
5. योजना आर्थिक सर्वेक्षण– वार्षिक प्रतिवेदन, वित्त विभाग, बिहार सरकार, पटना
6. वें ।तरपज ;2010द्ध च्ंजजमतद ंदक क्मजमतउपदंदजे व ि बीपसक ेमग तंजपव पद त्नतंस च्नदरंइए भ्पसस ळमवहतंचीमत टवसण ग्ट.1 – 2 चण 37ण
7. ळंपसउवजवए ठण्ण ;2007द्ध रू बेंतबजमतपेजपबे व ि मग तंजपव प्उइंसंदबम ंदक थ्नजनतम पद प्दकपंण
8. झंनीपाए ैण्छण ;2010द्ध प्उइंसंदबम ैमग तंजपव पद भ्तंलंदं ज्तमदके ंदक ैवबपंस क्पउमदेपवदण ।ददंसे व ि जीम छ।ळण्ए टवसण ग्गग्ए छवण 2ए चण 72

।इवनज ।नजीवत. क्तण् ींउइीन ज्ञनउंत
चीण्क्ण्
न्दपअण् क्मचंतजउमदज वि ळमवहतंचील
ठण्त्ण् ।ण्ठपींत न्दपअमतेपजलए डन्रंििचनत
ठपींतए च्पद ब्वकम. 842001
डवइपसम छवण् 9386239405
म्उंपस प्करू ींउइीनपजीं/हउंपसण्बवउ

भ्पे त्मेमंतबी प्दजमतमेजमक प्दबसनकम कंजं बवससमबजपवद ंदक पिमसक `नतअमल मजबण्